International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org

वनस्पति और पशु जगत का सहअस्तित्व: 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के सन्दर्भ में आधुनिक पर्यावरणीय परिस्थितियों का अध्ययन

. सुजीत कुमार पटेल[1], प्रीती पटेल[2]
[1]संस्कृत विभाग, मड़ियाहूँ पी.जी. कॉलेज, मड़ियाहूँ, जौनपुर
[2]संस्कृत विभाग, किसान पी.जी. कॉलेज, तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर
*Corresponding author email: sujeetbhu49@gmail.com

Received:23 August 2025, Revised: 15 October 2025, Accepted: 01 December 2025, Available Online: 15 December, 2025

शोध सार

प्रस्तुत शोध में वर्तमान समय की पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन किया गया है । अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरणीय असन्तुलन उत्पन्न हो गया है । प्राचीन समय में मनुष्य प्रकृति के साथ सामन्जस्य बनाकर रहता था । पर्यावरण के साथ मनुष्य का सम्बन्ध महाकवि कालिदास के नाटक में जिस प्रकार से दिखाया गया है । वह वर्तमान में भी अत्यन्त प्रासंगिक है । यह शोध पत्र वर्तमान स्थिति में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की पर्यावरणीय दृष्टि की उपयोगिता का अध्ययन करता है ।

मुख्य शब्द- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, सहअस्तित्व, जैव-विवधता, पर्यावरणीय संकट ।

प्रस्तावना- समस्त प्राणियों की उत्पत्ति का आदि कारण प्रकृति है । मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही प्रकृति उसके जीवन का आधार रही है । मनुष्य अपने भोजन, वस्त्र तथा आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रकृति पर ही निर्भर था । आज के औद्योगिक युग में भी वह प्रकृति पर ही निर्भर है, परन्तु उसका प्रकृति के दोहन का तरीका बदल गया है । जहाँ प्रारम्भिक अवस्थाओं में वह प्रकृति को केवल एक संसाधन न मानकर उसको अपनी सहचरी, चेतन शक्ति, जीवन-दायिनी की तरह देखता था और उसका उपभोग भी आवश्यकतानुसार ही करता था, वहीं

आज की स्थिति इसके बिल्कुल उलट है । मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन करता जा रहा है । इसके कारण पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी में अनेक विनाशकारी बदलाव देखने को मिल रहे हैं । 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' एक ऐसा रुपक है, जिसमें आश्रम-जीवन, वनों की पारिस्थितिकी, वनस्पतियों का संरक्षण, पशु-पक्षियों की भावनात्मकता तथा उनके प्रति प्रेम और अहिंसा और प्रकृति-मानव सहअस्तित्व पूर्ण जीवंतता के साथ अभिव्यक्त हुआ है ।

वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार पृथ्वी से लगभग 10 लाख से अधिक प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं । वनों का 40% हिस्सा मानवीय गतिविधियों के कारण विनष्ट हो चुका है । वन्यजीवों के आवास नष्ट हो रहे हैं । संयुक्त राष्ट्र के आँकड़े के अनुसार - "अधिकांश प्रमुख स्थलीय आवासों में कम से कम 20 % की गिरावट आई है । मुख्यतः सन् 1900 के बाद से 40% से अधिक उभयचर प्रजातियाँ, लगभग 33% प्रवाल भित्तियाँ और एक तिहाई से अधिक समुद्री स्तनधारी जीव संकटग्रस्त हैं । कीट प्रजातियों के लिये स्थिति कम स्पष्ट है लेकिन उपलब्ध साक्ष्य 10 % प्रजातियों के संकटग्रस्त होने के एक अस्थायी अनुमान का समर्थन करते हैं । 16 वीं शताब्दी से अब तक कम से कम 680 कशेरुकी प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं और भोजन और कृषि के लिये उपयोग की जाने वाली सभी पालतू स्तनधारी प्रजातियों में से 9 % से अधिक 2016 तक विलुप्त हो चुकी हैं और कम से कम 1000 और प्रजातियाँ अभी भी संकटग्रस्त हैं ।"[1]

नदियाँ औद्योगिक कचरों के कारण प्रदूषित हो रही हैं, अत्यधिक वैश्विक तापन से ध्रुवों तथा पहाड़ों पर जमी बर्फ पिघल रही है, जिसके कारण नदियों में बाढ़ तथा समुद्र के जलस्तर में वृद्धि हो रही है । इससे द्वीपों पर स्थित अनेक देशों के जलमग्न होने का खतरा है ।

भारतीय काव्यपरंपरा में नाटककार कालिदास प्रकृति-संवेदनशीलता के सर्वोच्च प्रतिनिधि माने जाते हैं । कविकुलगुरु कालिदास का प्रकृति प्रेम उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखाई देता है । अभिज्ञानशाकुन्तल में मनुष्य एवं प्रकृति का सजीव सम्बन्ध देखने को मिलता है । प्रकृति मनुष्य की सहचरी है, वह एक संवेदनशील चरित्र है, भावनात्मकता से युक्त तथा मनुष्य के साथ संवाद करती है । यह नाटक एक ऐसे समाज की कल्पना है, जहाँ मनुष्य और प्रकृति परस्पर आश्रित, पोषक तथा नैतिक रुप से आपस में जुड़े हुए हैं ।

[1] UN IPBES रिपोर्ट, जुलाई, 2019

<u>उद्देश्य-</u> आधुनिक युग में जब वैश्विक जलवायु परिवर्तन, जैवविविधता के तीव्र विनाश, वन-नाश, प्रजातियों के विलुप्ति-संकट और पारिस्थितिक असंतुलन की समस्याएँ चरम पर हैं, तब 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की प्रकृति-दृष्टि आज के पर्यावरणीय संकट को समझने का एक नया रास्ता खोलती है । इसका उद्देश्य यह समझना है कि शास्त्रीय साहित्य की प्रकृति-दृष्टि कैसे आज की पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए नए संकेत दे सकती है ।

<u>विषय विस्तार</u> - पर्यावरण अपने आप में एक विस्तार को समेटे हुए है । पर्यावरण का सामान्य अर्थ है हमारे आस-पास स्थिति समस्त जैविक एवं अजैविक घटकों का समन्वय । पर्यावरण प्रकृति में पाये जाने वाले इन्हीं घटकों से संचालित और नियमित होता है । जब किन्हीं कारणों से इसमें असन्तुलन होता है, तो वह समस्त प्राणियों को प्रभावित करता है । क्योंकि सभी इसी पर्यावरण का हिस्सा हैं । वर्तमान परिदृश्य में इसी पर्यावरणीय असंतुलन के कारण जीव-जगत पर संकट आ गया है । 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में कालिदास ने प्रकृति के साथ मनुष्य का जो सामन्जस्य दिखाया है, वह आज की पर्यावरणीय परिस्थितियों को सन्तुलित रखने के लिये वरदान से कम नहीं है । हम क्रमशः इसका विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे कि कैसे इन पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान कालिदास ने एक नाटक में दिया है ।

नाटक का प्रथम श्लोक ही पर्यावरणीय विविध घटकों के साथ सामन्जस्य के माध्यम से प्राणियों के कल्याण की बात करता है -

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्यविश्वम् ।

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्याक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतुवस्ताभिरष्टाभिरीशः ।।[2]

पंचमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश), सूर्य, चन्द्रमा और यजमान (मनुष्य) ये सभी आठ प्रत्यक्ष विद्यमान मूर्तिरुप शिव से सभी की रक्षा की प्रार्थना की गयी है । ये सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से पर्यावरण को प्रभावित करते हैं । इनको प्राणियों की रक्षा करने वाला स्रोत मानना कवि की दूरदृष्टि का प्रतीक है । पाँच महाभूतों में सामन्जस्य, उनकी स्वच्छता आदि से समस्त

[2] अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/1

पर्यावरण प्रभावित होता है । वहीं सूर्य और चन्द्रमा की गति और प्रकाश पृथ्वी की जलवायु को स्पष्ट रुप से प्रभावित करते हैं । मनुष्य भी यजमान के रुप में बताया गया है कि वह भी रक्षा करे, क्योंकि मनुष्य अपनी गतिविधियों से प्राणियों के कल्याण को प्रभावित करता है ।

पर्यावरण अपने स्वाभाविक रुप में जंगलों, जीवों तथा मनुष्य से युक्त होती है । अगर देखा जाय तो सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति इन्हीं सभी से हो सकती है । सभी पशु-पक्षी एवं जीव तो प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं और अपनी आवश्यकता भर का प्रकृति से लेते हैं लेकिन मनुष्य में इतनी तृष्णा है कि उसकी पूर्ति के लिये उसने प्रकृति से सभी जीवों के हिस्से को भी छीनने का प्रयास किया है । मनुष्य का यह प्रयास ही पर्यावरण की स्थिरता में क्षोभ उत्पन्न करता है । 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में भी हम देखते हैं कि राजा दुष्यन्त मृगया के लिये तपोवन में अपनी सेना के साथ प्रवेश करके किस प्रकार वहाँ के जीवों को प्रभावित कर देता है ।

तीव्राघाततादभिमुखतरुस्कभग्नैकदन्तः

प्रौढाकृष्टव्रततिवलयासञ्जनाज्जातपाशः ।

मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो

धर्मारण्यं विरुजति गजः स्यन्दनालोकभीतः।।[3]

जैसे रथों को देखकर जीवों में भय उत्पन्न हो गया और वे इधर-उधर भागने लगे । यह हस्तक्षेप वर्तमान में भी मनुष्य कर रहा है, वन्य जीवों के शिकार और वृक्षों की कटाई से वन्य पारिस्थितिकी को क्षुब्ध कर रहा है ।

राजा जिस मृग पर बाण चलाने वाला था अचानक से आये दो तपस्वियों ने उसको ऐसा करने से रोका । वे कहते हैं कि "कहाँ दयनीय हरिण का अतिचंचल जीवन और कहाँ वज्र के समान आपके ये बाण । ये तो रुई के ढेर में अग्नि के समान हैं । आपके शस्त्र तो पीड़ितों की रक्षा के लिये हैं, निरपराधों पर प्रहार के लिये नहीं ।"[4]

[3] 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' 1/35

[4] अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/ 10

नाटक में सर्वत्र मनुष्य एवं पशुओं के बीच प्रेमपूर्ण सम्बन्धों की अभिव्यक्ति हुई है । शकुन्तला ने माता की मृत्यु के पश्चात् अनाथ हुए एक मृग के बच्चे को पाला है, उसकी देखभाल करती है । कुशों से उसका मुख विद्ध हो जाने पर उसपर हिंगोट का तेल लगाकर सावें के चावलों से उसका भरण-पोषण करती है ।[5] उसकी विदाई के समय मृगों ने प्रेम के कारण ही घास खाना छोड़ दिया, मोरों ने नाचना छोड़ दिया मानो शकुन्तला के जाने का दु:ख उनको भी हो रहा हो ।[6] शकुन्तला अपनी विदा के समय अपने पिता से कहती है कि गर्भवती हुई मृगी का प्रशव हो जाने पर उसकी सूचना उसको किसी से भिजवा दें ।[7] इससे पता चलता है कि उनका पशुओं के प्रति परिवार के सदस्यों जैसा ही प्रेम है । महर्षि कश्यप के आश्रम में पशुओं और मनुष्य साथ में रहते हैं । हिंसक पशु भी वहाँ पर हिंसा छोड़कर रहते हैं तथा लोगों का उनपर ममत्व दिखाई देता है । जब सर्वदमन सिंह के बच्चे को पकड़ कर उसके दाँत गिनने का प्रयास करता है और उसको कष्ट देता है तो उसके पास उपस्थित ऋषिका उसको कहती है कि हमारे पुत्र के समान जीवों को तुम कष्ट मत दो ।[8]

मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठतम् और शक्तिशाली है, उसे इससे शिक्षा लेनी चाहिये । पारिस्थितिकी तन्त्र में सभी जीवों का अपने अनुरुप उपभोग से ही सन्तुलन रहता है । वर्ष 1500 से अबतक 160 ज्ञात पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं । पक्षियों की लगभग 223 प्रजातियाँ अत्यन्त संकटग्रस्त, 460 प्रजातियाँ संकटग्रस्त तथा 798 प्रजातियाँ उच्च जोखिम में हैं । 8 में से 1 पक्षी प्रजाति संकट में है । पक्षियों की कमी पारिस्थितिकी संतुलन के विघटन का संकेत है । वर्तमान में वन्य-जीवन तथा मनुष्य के बीच का विवाद अत्यधिक खनन, हाईवे का निर्माण के कारण सहजीवी सम्बन्ध का विनाश हो चुका है । महर्षि कण्व का आश्रम प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग, संरक्षण, सहजीवन, अहिंसा, वन एवं वन्य जीव संरक्षण तथा पशु-मनुष्य के सह अस्तित्व का आदर्श प्रस्तुत करता है । आश्रम में मृग बिना भय के रहते हैं । वहाँ उनका वध वर्जित है । यह नैतिक पारिस्थितिकी (Ethical Ecology) का आदर्श है । आधुनिक संरक्षण नैतिकता (Conservation Ethics) इसी पर आधारित है, जो प्रकृति, प्रजातियों और प्राकृतिक संसाधनों के साथ मनुष्यों के नैतिक सम्बन्धों और जिम्मेदारियों पर केन्द्रित है, यह सिखाता है कि प्रकृति का अपना आन्तरिक मूल्य है और हमें वर्तमान तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिये पृथ्वी की देखभाल करनी चाहिये, जिससे हम मानवीय स्वार्थ से परे जाकर प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर

[5] अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/16

[6] अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/14

[7] तात! एषा उटजपर्यन्तचारिणी .....प्रियनिवेदकं विसर्जयिष्यसि । अभिज्ञानशाकुन्तलम्/ 4

[8] किं न: अपत्यनिर्विशेषाणि सत्वानि विप्रकरोषि । अभिज्ञानशाकुन्तलम् /7

सकें । आश्रम के नियम वर्तमान समय के इको-गवर्नेंस, कम्युनिटी फॉरेस्ट मैनेजमेंट और सस्टेनेबल इकोलॉजी के अत्यन्त निकट हैं ।

शकुन्तला तथा उसकी सखियाँ पौधों को नियमित रुप से जल देती हैं । उनका पौधों के प्रति बड़ा प्रेम है । बिना पौधों को जल दिये वह स्वयं भी जल नहीं पीती तथा पहली बार पौधों में पुष्प आने पर उत्सव मनाती है ।[9] शकुन्तला ने नवमालिका के पौधे का नाम वनज्योत्स्ना रखा है । उन सभी पौधों पर उसका अपने बन्धुओं के समान स्नेह है । महर्षि कण्व को भी पेड़-पौधों पर शकुन्तला के समान ही स्नेह है । शकुन्तला पौधों को गले लगाती है, पशुओं को दुलारती है, उसकी यह क्रियाएँ प्रकृति समानुभूति (Nature Empathy) का सर्वोच्च रुप हैं । वृक्षों को अपने परिवार का स्थान देना ही भारत की पारंपरिक पारिस्थितिकी में एक गहरा तत्व है ।

विदाई के समय पेड़-पौधों से उसको अनेक प्रकार के आभूषण आदि प्राप्त होते हैं । किसी से रेशमी वस्त्र, किसी ने अलक्तक, किसी ने अन्य प्रकार के सुन्दर आभूषण प्रदान किये ।[10] शकुन्तला को पहनने के लिये अनसूया ने भी नारियल के डिब्बे में मौलशिरी की माला रखी हुई थी । इस प्रकार प्रकृति के प्रति मनुष्य का जितना प्रेम है, बदले में प्रकृति भी उसी प्रकार से अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करती हुई दिखाई गयी है । शकुन्तला के जाते समय मानो वृक्षों ने पत्तियाँ गिराकर अपना शोक प्रकट किया और कोयल की आवाज के माध्यम से मानो उसे जाने की अनुमति प्रदान की ।[11]

शकुन्तला के अस्वस्थ होने पर उसके उपचार में भी प्राकृतिक औषधियाँ ही काम आती हैं । उसकी तथा उसके पेड़ -पौधों के बीच का यह सम्बन्ध सहअस्तित्व और सहोपकारिता का उत्तम उदाहरण है । कण्व आश्रम औषधीय वनस्पतियों से घिरा है। ऋषि-महर्षि उनका संरक्षण और उपयोग दोनों करते हैं । इसके विपरीत विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्तमान समय जलवायु परिवर्तन तथा अत्यधिक कटाई के कारण बहुत से औषधीय पौधे विलुप्ति के कगार पर हैं । अनेक आधुनिक दवाओं का निर्माण औषधीय पौधों से निकले घटकों पर आधारित है । दुनिया की काफी बड़ी आबादी पारंपरिक दवाओं पर निर्भर करती है । कण्व के आश्रम का उदाहरण हमें अपने पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान और जैव विविधता को बचाने की प्रेरणा देता है ।

---

[9] पातुं न प्रथमं .....सर्वैरनुज्ञायताम् । अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/11

[10] क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरुणा.....किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्दिभिः । अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/7

[11] अनुमतगमना शकुन्तला.....प्रतिवचनीकृतमेभिरात्मनः । अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/13

आधुनिक समय में हम देख रहे हैं कि बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, आवासों का निर्माण, खेती का विस्तार तथा औद्योगिकीकरण के कारण वन्य पारिस्थितिकी पर संकट आ गया है । वृक्षों को अपना परिवार मानने की संवेदना का लोप ही आज की जैव-विविधता की क्षति का सबसे बड़ा कारण है ।

नाटक में कमल तथा कुमुद आदि सुन्दरता, स्वच्छता तथा जल-जीवन ऊर्जा का प्रतीक हैं, इससे जलीय स्वास्थ्य का पता चलता है । उस समय लोगों का स्नान तथा पीने के लिये प्राकृतिक जल स्रोतों पर ही निर्भर रहते थे । इसके विपरीत आज जल के स्रोतों का प्रदूषण, झीलों का सूखना तथा आर्द्रभूमियों का विनाश सर्वत्र दिखाई दे रहा है ।

पौधों को पानी देते समय भ्रमर शकुन्तला के आस-पास मंडराता है । भ्रमरों का रहना प्रकृति की जीवन्तता का प्रतीक है । आधुनिक समय में भ्रमर तथा मधुमक्खियों का लुप्त होते जाना पारिस्थितिकी के सबसे गम्भीर संकट की निशानी बन गयी है । भ्रमर तथा मधुमक्खियाँ पौधों के रस लेने के साथ पुष्पों के परागण के स्रोत होते हैं, परन्तु आज उनपर ही संकट मंडरा रहा है ।

नाटक में चित्रित आश्रम-जीवन शून्य-अपशिष्ट (zero waste) व्यवस्था पर आधारित है, अर्थात् वहाँ पर किसी प्रकार के अपशिष्ट का उत्पादन नहीं के बराबर होता है । अनेक सामग्रियों का पुनः उपयोग कर लिया जाता है । जैसे शकुन्तला की सखी अनसूया उसके लिये नारियल के डिब्बे में मौलसिरी की माला रखती है ।[12] नारियल का जो खोल बचा हुआ है, उसका उपयोग डिब्बे के रुप में करना शून्य अपशिष्ट का एक अच्छा उदाहरण है । आश्रम में निवास करने वाले लोग स्थानीय संसाधनों पर ही निर्भर करते हैं, उनका जीवन अत्यन्त सीमित संसाधनों में ही चल जाता है । यद्यपि वे अपने तपोबल से सबकुछ प्राप्त करने में सक्षम हैं, परन्तु वे उपभोग की अपेक्षा त्याग को ही महत्व देते हैं । महर्षि मारीच के आश्रम का एक दृश्य द्रष्टव्य है । यह संयम का उत्तम उदाहरण है, जहाँ पर तपस्वी कल्पवृक्ष के होते हुए भी केवल वायु पर जीवन धारण करते हैं, स्वर्णकमलों के पराग से पीले जल में स्नान करते हैं, रत्न-शिला-निर्मित गृहों में ध्यान लगाते हैं -

[12] नारिकेलसमुद्भके एतन्निमित्तमेव मया कालहरणक्षमा केसरमालिका निक्षिप्ता तिष्ठिति। अभिज्ञानशाकुन्तलम् /4

प्राणानामनिलेन वृत्तिरुचिता सत्कल्पवृक्षे वने

तोये काञ्चनपद्मरेणुकपिशे पुण्याभिषेकक्रिया ।

ध्यानं रत्नशिलागृहेषु विबुधस्त्रीसन्निधौ संयमो

यद्वांछन्ति तपोभिरन्यमुनयस्तस्मिंस्तपस्यन्त्यमी ।।[13]

औद्योगिक विकास की होड़ में दौड़ने वाले वर्तमान मनुष्य के लिये यह सतत विकास का यह एक सबक है ।

राजा दुष्यन्त का आश्रम में प्रवेश एक संक्रमण की स्थिति को दर्शाता है, जब मनुष्य अपनी दुर्निवार शक्ति से जंगलों की पारिस्थितिकी को बदलने लगता है । मानवीय गतिविधियों के कारण वनों का निरन्तर विनाश हो रहा है । नाटक में वर्णित ऋतुओं में ऋतुचक्रण प्रणाली के संतुलन का प्रदर्शन किया गया है । वर्तमान में जलवायु परिवर्तन के कारण पूरे ऋतुचक्र में बाधा उत्पन्न हो गयी है ।

नाटक में दिखाई गयी जीवों तथा वनस्पतियों की विविध प्रजातियाँ उस समय के साथ वर्तमान स्थिति की तुलना का अवसर प्रदान करता है, जब अनेक प्रकार के जीव-जन्तु तथा वनस्पतियाँ लुप्त हो चुकीं हैं । जो उस समय में सामान्यतः पायी जाती रही होंगी । आजकल इसको 'आधुनिक पारिस्थितिकीय बेसलाइन शिफ्ट' (modern ecological baseline shift) अथवा 'शिफ्टिंग बेसलाइन सिंड्रोम' के नाम से जाना जाता है । इसका तात्पर्य यह है कि समय के साथ पर्यावरण की स्थिति के लिये स्वीकृति मानक कम होते जाते हैं, क्योंकि हर नयी पीढ़ी पर्यावरण की उस स्थिति को सामान्य मान लेती है, जिसमें वह पली-बढ़ी होती है, बजाय कि ऐतिहासिक रुप से अधिक पर्यावरणीय समृद्ध स्थिति के । चिपको आन्दोलन, जनजातीय वन अधिकार आदि इसी पर आधारित हैं ।

नाटक में आश्रम का जीवन जिसमें वनों का स्पष्ट महत्व दिखाई देता है, मनोवैज्ञानिक रुप से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है । प्रकृति में समय बिताना तनाव को कम करता है । प्रकृति से दूरी तनाव, अवसाद तथा चिंता का एक बड़ा कारण है ।

[13] अभिज्ञानशाकुन्तलम् 7/12

<u>उपसंहार</u> - इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् मनुष्य और पर्यावरण के बीच एक संतुलित सम्बन्ध को दिखाता है । यह बताता है कि प्रकृति केवल संसाधन नहीं सहचर है, मनुष्य और वनस्पति-पशु जगत् परस्पर पोषक और सहजीवी हैं । प्रकृति के साथ भावनात्मक संबंध पारिस्थितिकी प्रबंधन के प्रति मनुष्य को नैतिक जिम्मेदारी का अनुभव कराता है ।

पर्यावरणीय असन्तुलन मानव समाज और प्रकृति दोनों के लिये पतन का कारण बन सकता है । इस समय जब पृथ्वी जैव-विविधता संकट, पर्यावरणीय प्रदूषण, वैश्विक तापन आदि विविध प्रकार के पर्यावरणीय संकटों से सबसे अधिक ग्रस्त है तब कालिदास की प्राकृतिक संवेदना एक वैकल्पिक नैतिकता, पारिस्थितिक चेतना तथा धारणीय जीवनशैली के लिये मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकती है ।

सन्दर्भ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कालिदास, सम्पादक तारिणीश झा, प्रकाशक डालीगंज, रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ।
2. कालिदास का प्रकृति चित्रण, निर्मला उपाध्याय, प्रकाशक नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. UN REPORT Intergovernmental Science-Policy Platform on Biodiversity and Ecosystem Services (IPBES), JULY ,2019
4. Birdlife International — *State of the World's Birds 2022*
5. Rainforest Foundation Norway (RFN), REPORT 2021